(*) प्रश्न: 'गबन' के आधार पर रमानाथ का चरित्र।

उत्तर: रमानाथ 'गबन' उपन्यास का नायक है। वह मुंशी दयानाथ के तीन पुत्रों में सबसे बड़ा है। वह मुख्यत: निम्न-मध्य-वर्ग के नवयुवकों का प्रतीक चरित्र है। उपन्यास में प्रदर्शित उसके प्रमुख चारित्रिक गुणों-अवगुणों को निम्नलिखित शीर्षकों में विवेचित किया जा सकता है—

1. मिथ्या-प्रदर्शन की भावना → रमानाथ में अपनी तथा अपने परिवार की स्थिति एवं गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की मनोवृत्ति है — चाहे वह अपने पिता, पत्नी या मित्र आदि किसी से भी बातें क्यों नहीं कर रहा हो। लेखक के अनुसार उसका "दोस्तों की बदौलत शौक पूरा होता रहता था। किसी का कोट माँग लिया और शाम को हवा खाने निकल गये, किसी का पंप शू पहन लिया, किसी की घड़ी कलाई पर बाँध ली। कभी बनारसी फैशन में निकले, कभी लखनवी फैशन में।" उसकी यह मिथ्या-प्रदर्शन की भावना ही उसको तथा उसके पिता को विवाह के अवसर पर सामर्थ्य से अधिक व्यय करने को प्रेरित करती है। अपनी पत्नी के सामने वह डींग हाँकता है कि उसकी अच्छी-खासी जमींदारी है, जिससे कई हजार का लाभ होता है तथा बैंक में उसके पिता का पचास हजार रुपये जमा है। उन्हें नौकरी करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। वहाँ तो वे मात्र दिल बहलाने जाते हैं। ऐसी ही डींग वह अपने मित्र रमेश बाबू के सामने भी हाँकता है। लेखक के अनुसार — "उसकी मान्यता थी कि घर की असली दशा को सदैव बदनामी की तरह छिपाना चाहिए और इसीलिए वह अपने सभी मित्रों से बढ़-बढ़कर बातें करता था।" रतन को पार्टी देते समय वह अपनी धनाढ्यता के मिथ्या-प्रदर्शन के लिए मेज-कुर्सियाँ, [illegible] आदि सभी वस्तुएँ रमेश बाबू के यहाँ से माँग कर लाता है। यद्यपि वह हाईस्कूल पास 30/- मासिक वेतन पाने वाला साधारण क्लर्क है, फिर भी वकील इन्द्रभूषण से अपना परिचय इस प्रकार देता है मानो वह बी.ए. पास हो और किसी बड़े पद पर नियुक्त हो।

2. संकोचशीलता — रमानाथ प्रदर्शन-प्रिय होने के साथ-साथ बड़ा संकोचशील भी है। उसके मन में बार-बार अपनी वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करने का विचार तो उठता है, किंतु अपनी संकोचशीलता के कारण कभी भी उसे स्पष्ट नहीं कर पाता, फलस्वरूप नाना प्रकार की विपत्तियों में फँस जाता है। संकोच के कारण उसकी प्रथम पराजय उस समय होती है, जब उसके पिता उससे यह अपेक्षा करते हैं कि

APRIL '96						
S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY '96						
S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

MARCH

Friday ________ **15**

वह जालपा को उसके परिवार की आर्थिक दशा से अवगत कराके उसके कुछ आभूषण सर्राफ का ऋण चुकाने को माँग ले। पर, संकोचवश वह ऐसा नहीं कर पाता, जब उसके दफ्तर के रुपये जालपा द्वारा रतन को सौंप दिये जाते हैं और वह उन्हें जमा करने की घोर चिंता में ग्रस्त होता है, तब भी संकोचवश न तो जालपा को वस्तुस्थिति बताता है और न अपने पिता को। संकोच के कारण ही वह रतन के घर जाकर भी रुपये नहीं माँग पाता। उसकी ऐसी ही संकोचशील प्रवृत्ति पर रमेश बाबू आक्षेप करते हैं — "अपने बाप से कहते भी शर्म आती है, रतन से कहते भी शर्म आती है? अगर अपने लोगों से यह संकोच होता तो आज इसकी यह दशा क्यों होती?"

3. कपटी एवं झूठा → रमानाथ में झूठ बोलने का दुर्गुण भी प्रचुर मात्रा में है। अपने मिथ्या-दिखावे को छिपाने के लिए वह अनेक बार झूठ का आश्रय लेता है। यद्यपि वास्तविकता उससे छिपी नहीं है, फिर भी वह जालपा से झूठ बोलता है। उससे वह अपने परिवार के आय-व्यय का विवरण बढ़ा-चढ़ाकर देता है तथा अपना वेतन भी बढ़ाकर बताता है। वह अपने पिता से झूठ बोलता है कि मैं रिश्वत नहीं लेता। देवीदीन और जग्गो से स्वयं के ब्राह्मण होने का झूठ बोलता है। मुखबिर के रूप में वह दिनेश आदि क्रांतिकारियों पर चलने वाले मुकदमे में भी उस डकैती के चश्मदीद गवाह होने का झूठा बयान देता है। इस प्रकार वह कभी मिथ्या-प्रदर्शन की कलई खुलने से बचने के लिए, कभी संकोचशील प्रवृत्ति के कारण और कभी स्वार्थ-सिद्धि के लिए झूठ बोलने का आश्रय लेता है।

9 A.M. 4. अस्थिरचित्त एवं भावुक → रमानाथ के चरित्र की सर्वाधिक दुर्बलता उसमें किसी
10 निर्णय लेने की दृढ़ता का अभाव तथा उसकी भावुकता है। विषम परिस्थितियों के सामने
11 उपस्थित हो जाने पर वह उनका कोई व्यावहारिक समाधान न खोजकर कल्पना-जगत में
12 विचरण करने लगता है। उदाहरणार्थ — दफ्तर के रुपयों को जमा कराने के लिए जालपा की
1 P.M. कोई आभूषण पुनः चुराने की कामना से वह जालपा की जेब से चाबी निकालना
2 चाहता है, किंतु उसकी किसी कुलीन संस्कार के कारण धुकधुकी होकर उसका चित्त
3 अस्थिर हो जाता है और उसका अंतर्मन भावुक हो उठता है।
4 5. कायर → रमानाथ की एक अन्य प्रमुख चारित्रिक दुर्बलता उसमें आत्मविश्वास का अभाव
5 होने से स्वभावतः कायर एवं भीरु होना है। वह जीवन में कभी भी किसी परिस्थिति का
6 सामना न करके उससे मुँह छुपाकर ही निकलता है। पुलिस से वह ऐसा डरता है कि
दिन के उजाले में घर से बाहर नहीं निकलता। उपन्यास के अंत में उसकी कायरता

Scanned by CamScanner

FEBRUARY '96						
S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29		

MARCH '96					
S	M	T	W	T	F
31					1
3	4	5	6	7	8
10	11	12	13	14	15
17	18	19	20	21	22
24	25	26	27	28	29

और स्पष्ट हो जाती है। क्रोध में इसी स्त्री को बचाने के लिए जोहरा को अपने प्राण न्योछावर कर देनी है, किन्तु उनमें इतना साहस नहीं होता कि उसकी खोज की स्वयं चेष्टा करें।

6. पिता का आदर करने वाला → यह रमानाथ के चरित्र का उज्ज्वल पक्ष ही है। वह अपने पिता का आदर करता है और उनके सामने प्रायः खामोश ही रहता है। अपने दुःख का मूल कारण अपने पिता का परामर्श न मानने की मनोवृत्ति को मानता हुआ भी वह उनके समक्ष कुछ नहीं कहता।

7. पत्नी के प्रति अटूट प्रेम — रमानाथ अपनी पत्नी की रूप-माधुरी पर अत्यंत मुग्ध रहने वाला पति है और उसके लिए अपने प्राण तक न्योछावर करने प्रस्तुत रहता है। वह उसके आभूषण चुराकर उसे दुःख देने की अपेक्षा स्वयं कुँए में आत्महत्या करना अच्छा समझता है। उसे अपनी पत्नी से निश्छल प्रेम है लेकिन जोहरा से उसके अवैध सम्बन्ध होने के बावजूद वह अपनी पत्नी के प्रति निष्ठा पर कलंक लगने नहीं देता है। पत्नी के प्रति अटूट प्रेम के कारण ही वह उसकी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए गबन के कुमार्ग पर चल देता है। पत्नी-प्रेम के कारण ही वह सन्मार्ग पर आ जाता है।

इनके अलावा रमानाथ में परोपकारिता एवं विनोद, कार्यकुशलता, आत्मसम्मान की भावना आदि गुण भी हैं।

निष्कर्ष → उपर्युक्त विवेचनों से स्पष्ट है कि रमानाथ के चरित्र में सद्गुणों की तुलना में दुर्बलताएँ ही अधिक हैं। वह मध्यवर्ग के नवयुवकों की प्रदर्शन-प्रियता, डींग मारना, आलस्य-वृत्ति आदि से युक्त होने के साथ-साथ कायरता, नैतिक दृष्टिकोण के प्रति शिथिलता, अस्थिरचित्तता आदि वैयक्तिक दुर्बलताओं से आक्रान्त है। उसके विषय में यह कहना ही उचित होगा कि प्रेमचंद ने उसके चरित्र पर आदर्शवाद की मुलम्मा न चढ़ाकर उसे साधारण युवकों की भाँति हाड़-मांस का बना यथार्थ व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है।

— o —

Scanned by CamScanner